जुलाई 2025, मूल्य : 40

पूरवी

सृजन की उड़ान

संपादक
अपूर्व

महाप्रबंधक
अमित कुमार

शब्द-संयोजन
उषा ठाकुर

आवरण पृष्ठ : जनार्दन कुमार सिंह
रेखाचित्र : मार्टिन जॉन, आस्था

वर्ष : 17, अंक 10, जुलाई, 2025

मूल्य :

प्रति	:	रु. 40.00
वार्षिक, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 1000.00
आजीवन, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 10000.00

भुगतान इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी के नाम से किया जाए।
भुगतान ऑनलाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं।
बैंक : UNION BANK
खाता संख्या : 520101255568785
IFSC : UBIN **0905011**
बैंक शाखा : जी-28, सेक्टर-18, नोएडा-201301
उत्तर प्रदेश

प्रकाशक

इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी
बी-107, सेक्टर-63, नोएडा-201309
गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0120-4330755
editor@pakhi.in
pakhimagazine@gmail.com
www.facebook.comèpakhimagazine
Web portal : www.pakhi.in

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय। स्वामित्व इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसाइटी के लिए प्रकाशक, मुद्रक नारायण सिंह राणा द्वारा चार दिशाएं प्रिंटर्स प्रा.लि. जी-39, नोएडा से मुद्रित एवं बी-107, सेक्टर 63, नोएडा से प्रकाशित।

आवरण चित्र पाब्लो पिकासो की ख्याति प्राप्त कलाकृति 'The Weeping Woman' 1937 है। कहा जाता है इस चित्र में पिकासो ने अपनी प्रेमिका 'डोरा मोर' जो एक कला. कार और राजनीतिक रूप से सजग महिला थी, को चित्रित किया है। पिकासो ने उनके चेहरे को भिन्न कोणों और फटे टुकड़ों में दिखाया है, जैसे स्त्री के भीतर कई भावनाएं, कई संघर्ष और कई परतें एक साथ फटी हुई हों। यह स्त्री रो रही है, मगर वह केवल प्रेम में नहीं टूटी। वह एक युग की विडंबनाओं, युद्ध की पीड़ा और स्त्रीत्व की कठोर परीक्षा को जी रही है।

अनुक्रमणिका

संपादकीय/अपूर्व

इमरोज, अमृता और हमारे समय का प्रेम 4

कहानियां

तुम्हारे बिना : दयानंद पांडेय 6
मियां बस्ती : दिनेश कर्नाटक 12
इंसाफ : रणविजय 17
बंद दरवाजा : विनीता बाडमेरा 21
मरुस्थल में मल्हार (लघु कथा) : ट्विंकल तोमर सिंह 51

व्यंग्य कथा

घीसू-माधव : घीसू-माधव 27

कविताएं

सावित्री बड़ाईक की कविताएं 30
ओतो रेने कस्तिय्यो की कविताएं 32
दुर्गा प्रसाद गुप्त की कविताएं 34
दिनेश विश्नोई की कविताएं 36
आनंद बलराम की कविताएं 38

मूल्यांकन

बड़ी संभावनाओं के कवि : शिव कुमार यादव 40
सामाजिक-सांस्कृतिक विडंबनाओं की शिनाख्त करती कविताएं : कुमार वरुण 45
यथार्थपरक और संवेदना से भरपूर कविताएं : रणविजय राव 50

आलेख

महाश्वेता देवी के आदिवासी नायक और उनके वर्तमान सामाजिक संदर्भ : कुमारी उर्वशी 52

साक्षात्कार

मैं अदब के एक मुसलसल सफर में हूं : मुहम्मद हारून रशीद खान 56

विमर्श/यात्रा संस्मरण

भारत का विभाजन और इतिहास का विकृत स्वरूप : अनिल माहेश्वरी 67
महज किताबों में सिमट कर रह गए प्रेमचंद! : राजेंद्र राजन 73

स्थाई स्तंभ

कल्पित कथन

विस्मरण में जा रहे हमारे पुरोधा लेखक : कृष्ण कल्पित 82

सत्याग्रह

क्या हम तीसरे विश्वयुद्ध की ओर बढ़ रहे हैं? : प्रियदर्शन 85

कथा-मीमांसा

कलात्मक सब्र के कथाकार-2 : पंकज शर्मा 87

प्रति संसार

आई.क्यू. और ई.क्यू. का जंजाल : अर्पण कुमार 91

द पर्पल पॉइंट

यौनाकर्षण वाया सेपियोसेक्सुअलिटी : शोभा अक्षर 94

इमरोज, अमृता और हमारे समय का प्रेम

मैं कुछ बरस पहले इमरोज से मिलने गया...अमृता प्रीतम के जीवनसाथी। वह भेंट केवल एक साक्षात्कार नहीं थी, वह एक दर्शन था–प्रेम, समर्पण और स्वीकृति का दर्शन। उस बातचीत में जब मेरे सहयोगी प्रेम भारद्वाज ने उनसे पूछा था कि आपको कैसा लगता था जब अमृता आपके स्कूटर की पिछली सीट पर बैठते हुए आपकी पीठ पर साहिर लुधियानवी का नाम उकेरती थीं, तो इमरोज का उत्तर हमें सन्न कर गया था। उन्होंने कहा, 'इसमें गलत क्या था? वह साहिर से प्रेम करती थी इसलिए उसका नाम लिखती थी। मैं उससे प्रेम करता हूं, यह मेरा सच है।'

इमरोज का यह कथन प्रेम की उस ऊंचाई को दर्शाता है, जहां स्वामित्व नहीं, केवल समर्पण होता है। यह प्रेम अपनी परिपक्वता में इतना संपूर्ण है कि वह दूसरे के प्रेम को भी स्वीकार कर सकता है। लेकिन आज के समाज में, क्या प्रेम ऐसा है?

आज का प्रेम अक्सर अधिकार की भाषा बोलता है। 'तुम मेरी हो', 'मैं तुम्हें खो नहीं सकता', 'तुम अगर मेरी नहीं हुई तो किसी और की भी नहीं हो सकती'–ये वाक्य प्रेम नहीं, स्वामित्व और हिंसा की ओर इशारा करते हैं। और यही वह संक्रमण है, जहां से प्रेम से जुड़ी हिंसा की शुरुआत होती है।

इस बदलाव की जड़ें केवल सामाजिक नहीं, मनोवैज्ञानिक भी हैं। सिग्मंड फ्रायड, मनोविश्लेषण के जन्मदाता ने प्रेम को केवल भावनात्मक अनुभव नहीं, बल्कि गहरे दबे हुए मानसिक संवेगों और वासनाओं की परिणति माना। फ्रायड की 'Id', 'Ego' और 'Superego' की त्रयी हमें बताती है कि मनुष्य का व्यवहार तीन स्तरों पर चलता है। 'Id' हमारी अवचेतन इच्छाएं हैं, तत्काल संतोष चाहने वाली, बिना नैतिकता के। 'Ego' तर्क और सामाजिक संतुलन का स्तर है। 'Superego' समाज से सीखे आदर्श और नैतिक प्रतिबंध हैं।

जब प्रेम में अस्वीकृति आती है, जब कोई साथी किसी और की ओर आकर्षित होता है, या जब संबंध में दूरी आती है, तब Id, जो अधिकार, ईर्ष्या और संतोष की मांग करती है, वह Ego को पीछे छोड़कर व्यवहार में आ जाती है। यही वह अवस्था है जहां प्रेम हिंसा में बदलता है। यह हिंसा सिर्फ शारीरिक नहीं, भावनात्मक, मानसिक और कभी-कभी सामाजिक भी होती है।

आज समाज में जिस प्रकार नवविवाहितों के मध्य हत्या, आत्महत्या और अपराध की घटनाएं सामने आ रही हैं, वे केवल आपराधिक नहीं हैं, वे भावनात्मक अपरिपक्वता और सामाजिक अंधकार की अभिव्यक्ति हैं। प्रेम, जो आत्मा की ऊंचाई हो सकता है, वह जब असुरक्षित अहंकार से टकराता है, तब विनाश का रूप ले लेता है। फ्रायड के अनुसार, बहुत से मानसिक विकार बचपन की अपूर्ण इच्छाओं और दमन के परिणाम होते हैं। यदि कोई व्यक्ति बचपन में माता-पिता से अस्वीकृति, असमान व्यवहार या दमन झेलता है, तो वह बड़ा होकर अपने संबंधों में इसी असुरक्षा को दोहराता है। वह या तो अत्यधिक पजेसिव हो जाता है या पूर्णतः आत्मरक्षा की मुद्रा में आ जाता है।

स्त्रियों के संदर्भ में यह स्थिति और जटिल हो जाती है। जब एक लड़की बचपन से ही यह अनुभव करती है कि उसके भाई को स्वतंत्रता मिली, उसे नहीं, कि उसके निर्णय उस पर थोपे गए, जबकि भाई को विकल्प दिए गए, तो वह भीतर-ही-भीतर विद्रोह करने लगती है। कई बार यह विद्रोह स्वच्छंदता में, संबंधों को तोड़ने की प्रवृत्ति में और आत्मनाश में बदल जाता है। यह मानसिक संरचना सामाजिक विकृति का आधार बनती जा रही है। इसी तरह पुरुष भी जब भावनात्मक असुरक्षा के साथ बड़े होते हैं, तो वे अपने साथी को नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं। उनके लिए प्रेम 'देना' नहीं, 'पाना' बन जाता है। यही वह स्थान है जहां इमरोज जैसे उदाहरण अप्रत्याशित और दुर्लभ प्रतीत होते हैं।

इमरोज ने अमृता को पूर्ण रूप से स्वीकार किया, उसकी रचनात्मकता, उसकी स्वतंत्रता, यहां तक कि उसके अतीत और भावनात्मक लगावों को भी। वह प्रेम आत्मा की साधना था। आज के रिश्ते, जो इंस्टाग्राम के स्टोरीज और व्हाट्सएप के डिलिटेड मैसेज से चल रहे हैं, वहां यह गहराई संभव नहीं दिखती।

आज का समाज प्रेम को एक उपभोग की वस्तु बना चुका है, जिसमें भावना नहीं, अधिकार है, करुणा नहीं, नियंत्रण है। और यही वजह है कि जब प्रेम असफल होता है, तो वह दुख या स्वीकार नहीं, बल्कि प्रतिशोध बन जाता है।

'ट्रॉमा बॉन्डिंग' की अवधारणा को समझना यहां जरूरी हो जाता है। डॉ. पैट्रिक कार्न्स के अनुसार, जब कोई रिश्ता बार-बार शोषण और क्षमा के चक्र में चलता है, तो उसमें जुड़ाव विषाक्त हो जाता है। यह भावनात्मक निर्भरता व्यक्ति को अपने शोषक से अलग नहीं होने देती। फ्रायड की थ्योरी के संदर्भ में देखें तो यह Id का ही प्रभुत्व है, जो दर्द और